राष्ट्रोपनिषत्

रचयिता
स्व. आचार्य डॉ. नारायणशास्त्री काङ्कर विद्यालङ्कारः
(महामहिम-राष्ट्रपति-सम्मानित)

हिन्दी-रूपान्तरण-कर्त्री
सौ. श्रीमती इन्दु शर्मा
एम.ए., शिक्षाचार्या

अंग्रेजी-रूपान्तरण-कर्त्ता
महामण्डलेश्वरः स्वामी श्री ज्ञानेश्वरपुरी
विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थानम्, जयपुरम्

दुग्ध-दग्धः सफूत्कारं, तक्रं पिबति शङ्कितः ।
अपसार्या न तच्छङ्का, कियदपि प्रयत्यताम् ॥२०५॥

दूध का जला आदमी छाछ को भी फूँक फूँक कर पीता है । उसका डर दूर नहीं किया जा सकता, चाहे कितना भी प्रयत्न करलो ।

A person who was burned drinking hot milk will blow even on the buttermilk. His fear cannot be removed, does not matter how much one tries.

दुराचार-निरोधो न, विना दण्ड-प्रकाशनम् ।
दण्डो वासते लोकान्, दुराचार-प्रवर्त्तनाम् ॥२०६॥

बिना दण्ड का प्रकाशन किये दुराचारों को रोकना संभव नहीं है। दण्ड ही लोगों को दुराचारों में प्रवृत्त होने से रोकता है ।

It is not possible to stop the misbehaviour without the show/display of punishment. Only punishment stops people from misbehaving.

दुर्लभो नरदेहोऽयं, न नाश्यो वृथा क्वचित् ।
काले काले परीक्ष्य स्वं, सार्थकोऽयं विधीयताम् ॥२०७॥

यह मनुष्य शरीर दुर्लभ होता है, इसे व्यर्थ ही कहीं नष्ट नहीं करना चाहिये । समय समय पर आत्मपरीक्षण करके इसको सार्थक बनाना चाहिये ।

This rare human body should not be destroyed in vain. From time to time, it should be made meaningful by self-testing.

दुर्लभो मानुषो देहो, न नाश्योऽयं वृथा क्वचित् ।
अनेन कर्म तत् कार्यं, येन स्यादेष सार्थकः ॥२०८॥

यह मनुष्य शरीर दुर्लभ होता हैं, इसे व्यर्थ ही कहीं नष्ट नहीं करना चाहिये।इस शरीर से वह कार्य करना चाहिये जिससे शरीर सार्थक हो जाय ।

This rare human body should not be destroyed in vain. One should do such work which will make this body/life meaningful.

दुर्लभं मानुषं देहं, लब्ध्वा यदि न सत् कृतम् ।
तर्हि वृथैव जन्मेदं, यापितं तुच्छ–कर्मसु ॥२०९॥
यदि दुर्लभ भी मनुष्य शरीर को पाकर सत्कर्म नहीं किया तो तुच्छ कार्यों में यह वृथा ही बता दिया ।

If even after getting this rare human body, the good deeds are not done, then by doing the trivial tasks, this life is called useless.

दुर्लभो मानुषं देहं, लब्ध्वा साधुर्न सेवितः ।
तर्हि तज्जन्म किं व्यर्थं, गतं नैवेति मन्यताम् ॥२१०॥
दुर्लभ मनुष्य शरीर पाकर यदि साधु–सन्तों की सेवा नहीं की गयी तो वह जन्म व्यर्थ ही चला गया, क्या ऐसा नहीं मान लिया जाय ?

Isn't that true that the birth is in vain if one does not serve the saints even after getting this rare human body?

दुर्विचारा यथा न स्युः, कार्या सत्सङ्गतिस्तथा ।
दुर्विचारोद्भवं कर्म, कं न क्लेश्यति क्वचित् ? ॥२११॥
मनुष्य को चाहिये कि उसमें दुर्विचार जैसे उत्पन्न न हो वैसी वह सत्सङ्गति करें । दुर्विचारों से उत्पन्न कर्म किसको क्लेश कहाँ नहीं पहुँचता हैं ?

One should keep good company so bad behaviour does not develop. Who and where will not be troubled by the deeds created by bad behaviour?